!! ॐ !!

"अद्भुत रामायण के परिशीलन में व्याकरण की उपयोगिता"

मनोज कुमार झा ;रिसर्च स्कॉलरद्ध
संस्कृत संकाय
जय प्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा ;बिहारद्ध।

नमामि गजाननं देवं जानकीं रघुनन्दनम् ।
यत्कृपया भवति नित्यं सर्वत्रा शुभ मंगलम् ।।

आज हम सब जिस आधुनिक वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं, उस युग में वेद, वेदाघ्गादि समस्त धर्मिक महाकाव्यों, सत्साहित्यों आदि में वर्णित सत्कर्मों को विस्मृत करते जा रहे हैं। हमारे समस्त क्रिया–कलाप, हमारी भावनायें, सम्वेदनायें, भाषागत विचार आदि कुंठित होते जा रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में महर्षि पाणिनी जन्य भाषा ज्ञान का सम्यक् विकास समस्त शास्त्राोपकारी भावना से कैसे हो? यह अत्यन्त विचारणीय प्रश्न है। क्योंकि–''**वेदोऽखिलो धर्ममूलम् स्मृतिशीले च तद्विदाम्**'' इस वेदवाक्य के अनुसार समस्त धर्मों एवं कर्मों का मूल वेद है और 'व्याकरण' को वेदों का मुख माना गया है। –

''**शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणस्मृतम्।**'

अतः वेद, वेदाघ्ग, पुराणेतिहास, दर्शन, साहित्यादि सकल शास्त्राों में वर्णित सत्कर्म, शिक्षा, उपदेश आदि समस्त ज्ञान की प्राप्ति मुख सदृश व्याकरण द्वारा ही सम्भव है। वेदों में वर्णित प्रथम संयुक्ताक्षर प्रणव 'ॠ का उच्चारण ही पाणिनीय व्याकरण के माहेश्वर सूत्रा ;प्रत्याहारद्ध अ, उ, म् वर्ण के संयोग से हुआ है, जो पाणिनीय व्याकरण के प्रभाव को दर्शाता है।

हम जानते हैं कि वेद धर्म, अर्थ, काम, एवं मोक्ष आदि पुरूषार्थ चतुष्ट्य के प्रतिपादक माने गये हैं। ये वेद भी अघ्गों के द्वारा ही व्याख्यात होते हैं। अतः वेदाघ्गों का अतिशय महत्त्व है। '**काव्यशास्त्रा**' में 'अघ्ग' शब्द का व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ होता है– उपकार करने वाला अर्थात् वेदों के वास्तविक अर्थ का भली भाँति दिग्दर्शन करानेवाला।– ''**अघ्गयन्ते=ज्ञायन्ते अभिभिरिति अघ्गानि**'' अर्थात् जिन उपकरणों से किसी तत्त्व के परिज्ञान से सहायता प्राप्त होती है, वे अघ्ग कहलाते हैं। अतएव वेदार्थ ज्ञान एवं उनके कर्मकाण्डादि के प्रतिपादन में पूर्ण सहायता प्रदान करने में जो सक्षम एवं सार्थक शास्त्रा है उन्हें ही विद्वान वेदाघ्ग के नाम से व्यवहृत करते हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द एवं ज्योतिष आदि छः वेदाघ्गों में सर्वश्रेष्ठ व्याकरण शास्त्रा ही है, जो मूक शास्त्राों को उत्कृष्ट वाणी प्रदान करता

है। वेद मन्त्रों के समुचित उच्चारण में सहायतार्थ व्याकरण शास्त्रों का प्रयोजन स्वतः सि(है, क्योंकि इसी से वैदिक मन्त्रों, पदों आदि का प्रकृति और प्रत्यय का विवरण प्रस्तुत करते हुए पदों के यथार्थ स्वरूप का परिचय देता है।

इस प्रकार–'**व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेनेति व्याकरणम्।**' इस प्रयोजन से वेद, पुराण, इतिहास शास्त्रा, वाणिज्य, सत्साहित्य, संगीत, योग, विज्ञान, भाषा आदि सकल शास्त्रों के समुपकारक पाणिनीय व्याकरण शास्त्रा की उपयोगिता निर्विवाद है।

मुनिवर कात्यायन ने भी पाणिनीय व्याकरणशास्त्रा के सम्बन्ध में कहा है, कि– '**रक्षोहागमलघ्वअर्थअसंदेहाः व्याकरणप्रयोजनम्**' अर्थात् शास्त्रों की रक्षा, उह, आगम लघु, अर्थ एवं सन्देह निवारणार्थ व्याकरण शास्त्रा का अध्ययन अपेक्षित है। वैयाकरण तो स्पष्ट रूप से कहते हैं कि –

यद्यपि बहुनाधिते यथापि पढ पुत्रा व्याकरणम्।
स्वजनः स्वजनोमाभूत सकलं शकलं सकृच्छकृत।।

अर्थात् हे पुत्रा तुमने अनेक शास्त्रों का तो अध्ययन किया, किन्तु व्याकरणशास्त्रा के अध्ययन नहीं करने से यह अपूर्ण रह गया। अतः व्याकरणशास्त्रा अवश्य पढ़ो, जिससे तुम्हें शब्दों का सम्यक् ज्ञान हो सके।

डवदजीसल वि प्दकवसवहपबंस इपइसपवहतंचील छमू समजजमत अप्रैल 1993 में नासा के वैज्ञानिक डतण त्पबा ठतपो द्वारा लिखित पत्रा में महर्षि पाणिनी एवं उनके शास्त्रों को थ्पतेज `वजिंूतमउंद ूपजीवनज भ्तकूंतम घोषित किया था, जिसका मुख्य शीर्षक था–श्रैदेातपज `वजिंूतम वित निजनतम ींतकूंतमश्ण इसमें यह बताने का प्रयास किया गया कि प्राकृत भाषाओं को कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए अनुकूल बनाने हेतु तीन दशक के प्रयासों के बाद वैज्ञानिकों ने 2600 वर्ष पूर्व ही हार मानकर आधुनिक समयानुकूल संस्कृत व्याकरण को कम्प्यूटर की सभी समस्याओं को हल करने में सक्षम एवं उपयोगी करार दिया।

इससे यह स्पष्ट है कि परम शिवभक्त महर्षि पाणिनी विरचित अष्टाध्यायी महाशास्त्रा मानवीय मस्तिष्क की सर्वोत्कृष्ट रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ है। पाणिनीय व्याकरणशास्त्रा एक मात्रा ग्रन्थ ही नहीं, बल्कि प्रकारान्तर से इसमें तत्कालीन भारतीय समाज, भौगोलिक परिदृश्य, सामजिक, आर्थिक शिक्षा एवं राजनैतिक जीवन, दार्शनिक चिन्तन, खान–पान, रहन–सहन आदि के प्रसंग भी स्थान–स्थान पर अंकित है।

आज भी हम पाणिनीय अष्टाध्यायी की सहायता से संस्कृत के प्राचीनतम साहित्यों एवं महाकाव्यों से लेकर नवीनतम रचनाओं का रसास्वादन करते हैं। अपने व्याकरण को अनुपम एवं सर्वग्राह्य बनाने के लिए पाणिनी ने देशाटन करके भारत के विभिन्न जनपदों की भाषा, उनके रीति–रिवाज, वेश–भूषा, उद्योग–धन्धे तथा उनके जाति एवं व्यक्तिवाचक नामों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर जन मानस के बीच उस

ज्ञान को प्रकाशित करने का पूर्ण प्रयास किया। उनका व्याकरण न केवल शब्दानुशासन की दृष्टि से परिपूर्ण है, अपितु तत्कालीन सभ्यता और इतिहास से भी परिपूर्ण है। तभी तो भविष्य पुराण के अन्तर्गत पाणिनी महाकाव्य की महत्ता को प्रतिपारित करते हुए कहा गया है कि–

''सूत्रापाठं धतुपाठं गणपाठं तथैव च।
लिघ्ग सूत्रां तथा कृत्वा निर्वाणमाप्तवान्।।''

;भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व–2 खण्ड अ0–31–श्लोक–13द्ध

पाणिनीय व्याकरण इतना सुव्यवस्थित वैज्ञानिक और सर्वाघ्गपूर्ण सि(हुआ है, कि उनके समक्ष विश्व के समस्त व्याकरण गौण हो गये हैं।

इस क्रम में मेरे शोध विषयक महाकाव्य ''**अद्भुत रामायण**'' एवं ''**वाल्मीकि रामायण**'' भी महर्षि पाणिनी के व्याकरणिक प्रभाव से अछूता नहीं है।–

महर्षि वाल्मीकि व्याकरण के भी प्रकाण्ड पण्डित थे। उन्होंने अपने महाकाव्य '**अद्भुत रामायण**' में व्याकरणजन्य पदों का अनेकशः स्थानों पर प्रयोग करके काव्य की कमनीयता, विशु(ता एवं चारूता को बढ़ाने का हर सम्भव प्रयास किया है।

आदिकवि वाल्मीकि ने जिस आदिकाव्य 'रामायण' का सृजन–

''मा निषाद् प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यत्क्रौमच मिथुनादेक मवधी काममोहितम्।''

श्लोक से प्रारम्भ किया है, उसमें भी कविवर वाल्मीकि ने पाणिनी के व्याकरण का पूर्णतः ध्यान रखा है। यथा– 1. '**मा निषाद् प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।**' उक्त पद्य में ''**न माघ्योगे**'' इस सूत्रा से माघ् के योग में अट् या आट् का निषेध होने से 'अगमः' में यहाँ अडागम नहीं होना चाहिए। अतः यहाँ 'माघ्' शब्द का प्रयोग न होकर निषेधर्थक 'मा' शब्द का प्रयोग कवि द्वारा किया गया है।

2. ''अद्भुतरामायण'' सर्ग–9 श्लोक–9 के अन्तर्गत वर्णित–

इक्ष्वाकूणां विशेषेण बाहुवीर्येण कत्थनम्।
तमेवं वादिनं तत्रा रामो वचनब्रवीत्।।

प्रस्तुत पद्य में ''इक्ष्वाकूणां'' शब्द में ''कर्तृकर्मणों कृति'' सूत्रानुसार षष्ठी का 'न लोकाव्यय निष्ठाखलर्थतृनाम्' इस पा0 सूत्रा से निषेध हो जाने पर 'इक्ष्वाकूणाम्' में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग विशु(रूप में दर्शनीय है, क्योंकि सम्बन्ध–विवक्षा में ''शेषे षष्ठी'' इस पा0 सूत्रा से षष्ठी विभक्ति का प्रयोग निर्बाध है।

3. इसी प्रकार–

एष आत्माहमव्यक्तो मायावी परमेश्वरः।

कीर्तीतः सर्ववेदेषु सर्वत्मा सर्वतोमुखः।। अ0 रा0 सर्ग 11/47

उक्त श्लोक के माध्यम से आदि कवि वाल्मीकि ने अनन्तकोटि ब्रह्माण्डाधिनायक परात्पर ब्रह्म श्री राम के परब्रह्मत्व प्रतिपादन हेतु जिस ''**परमेश्वर**'' शब्द का प्रयोग किया है, उसमें ''आद्गुणः'' पा0 सन्धि सूत्रानुसार परम+ईश्वर इस विच्छेद में 'म्' वर्ण्स्थ 'अ' एवं बाद के 'ई' वर्ण के संयोग से 'ऐ' वर्ण गुण रूप होकर 'परमेश्वर' शब्द बना है। इतना हीं नहीं ''**सर्ववेदेषु** सर्वात्मा'' शब्दों में भी ''**यतश्च निर्धरणम्**'' पा0 सूत्रानुसार जाति, गुण, क्रिया के आधर पर एक देश समुदाय से षष्ठी एवं सप्तमी कारक का प्रयोग निर्दिष्ट है।

4. सामासिक शब्दों के प्रयोग में भी कविशिरोमणि वाल्मीकि को दक्षता प्राप्त थी। उन्होंने अपनी कृति ''अद्भुत रामायण'' में बहुशः स्थानों पर समासगत शब्दों का प्रयोग करके उक्त रामायण की भाषा सौष्ठवता एवं उत्कृष्टता का बोध कराते हुए प्रस्तुत रामायण के सौन्दर्य में वृ(की है। यथा–

शंखचक्रगदा पप्रं धरयन्तं चतुर्भुजम्।
शु(जान्बुनदनिभं ब्रह्म विष्णुशिवात्मकम्।।
सर्वाभरण संयुक्तं पीताम्बरध्रं प्रभुम्।
श्रीवत्वक्षसं देवं पुरूषं पुरूषोत्तमम्।।

अ0 रा0 सर्ग–2/21/22

प्रस्तुत श्लोक में 'चतुर्भुज' 'पीताम्बर' एवं 'पुरूषोत्तम' शब्द में क्रमशः पा0 सूत्रा 1. ''संख्यापूर्वो द्विगुः'' 2. ''विशेषणं विशेष्येण बहूलम्'' एवं ''अनेकमन्य पदार्थे'' तथा 3. ''सत्तमी शौण्डैः'' ;2/1/40द्ध तथा ''सि(शुष्क पक्व बन्धैश्च'' के अनुसार–द्विगुः, बहुब्रीहि एवं सप्तमी तत्पुरूष समास परिलक्षित है।

इसी प्रकार **'अद्भुतरामायण'** सर्ग–27 श्लोक–7 के अन्तर्गत उ(ृत पदों में अव्ययीभाव समास के उदाहरण भी द्रष्टव्य हैं। यथा–

)षयश्चाभिनन्द्यैनं ससीतं रघनन्दनम् ।
आशीर्भिर्वर्ध्यामासुर्ययुश्चापि यथागतम् ।। ;अद्0रा0 सर्ग–27/7द्ध

उपर्युक्त पद्य में अन्तिम शब्द 'यथागतम्' में 'पूर्व पद प्रधनो अव्ययीभावः' इस पाणिनीय सूत्रानुसार पूर्व पद– 'यथा' अव्यय शब्द के रूप में प्रयुक्त है।

इसके अतिरिक्त **'सीतारामयोर्यतः'** **'भरतो लक्ष्मणश्चैव'** **'शैलश्रृंघ्ग समुच्छया'** आदि अनेक शब्दों को कविवर वाल्मीकि ने छन्दोब(किया है। जिसमें पा0 सूत्रानुसार अन्यान्य सामासिक लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

5. उपसर्ग और प्रत्यय का प्रयोग भी महामुनि वाल्मीकि प्रणीत **''अद्भुत रामायण**'' में प्रायः सर्वत्रा देखा जा सकता है। यथा–

ध्यानेन मां प्रपश्यन्ति केचिज्ज्ञानेन चापरे।
अपरे भक्तियोगेने कर्मयोगेन चापरे।।
सर्वेषामेव भक्तानामेष प्रियतरो मम।। 13/23

उपर्युक्त श्लोक में 'प्रपश्यन्ति' एवं 'अपरे' शब्द में क्रमशः 'प्र' और 'अ' उपसर्ग का दिग्दर्शन एवं 'प्रियतरम्' शब्द में ''द्विवचनविभज्योपपदे तरवीयसुनौ'' इस पा0 सूत्रा से दो सजातिय व्यक्तियों अथवा वस्तुओं में एक या दूसरे से उत्कर्ष या अपकर्ष बताते हुए 'तरप्' प्रत्यय युक्त शब्द–''अयमनयोः अतिशयेन प्रियः=प्रियतरः'' शब्द निर्दिष्ट है। ऐसे अनेक शब्द एवं पद्य प्रस्तुत रामायण में सर्वत्रा दृष्टिगोचर होते हैं। यथा–

रामस्तु पुष्पकारूढः सीतामालिंग्य बाहुना ।

में भी ''**यतश्च निर्धरणम्**'' पा0 सूत्राानुसार जाति, गुण, क्रिया के आधर पर एक देश समुदाय से षष्ठी एवं सप्तमी कारक का प्रयोग निर्दिष्ट है।

4. सामासिक शब्दों के प्रयोग में भी कविशिरोमणि वाल्मीकि को दक्षता प्राप्त थी। उन्होंने अपनी कृति ''अद्भुत रामायण'' में बहुशः स्थानों पर समासगत शब्दों का प्रयोग करके उक्त रामायण की भाषा सौष्ठवता एवं उत्कृष्टता का बोध कराते हुए प्रस्तुत रामायण के सौन्दर्य में वृ(की है। यथा–

शंखचक्रगदा पप्रं धरयन्तं चतुर्भुजम्।
शु(जान्बुनदनिभं ब्रह्म विष्णुशिवात्मकम्।।
सर्वाभरण संयुक्तं पीताम्बरध्रं प्रभुम्।
श्रीवत्वक्षसं देवं पुरूषं पुरूषोत्तमम्।। अ७0 रा0 सर्ग–2/21/22

प्रस्तुत श्लोक में 'चतुर्भुज' 'पीताम्बर' एवं 'पुरूषोत्तम' शब्द में क्रमशः पा0 सूत्रा 1. ''संख्यापूर्वो द्विगुः'' 2. ''विशेषणं विशेष्येण बहूलम्'' एवं ''अनेकमन्य पदार्थे'' तथा 3. ''सत्तमी शौण्डैः'' ;2/1/40द्ध तथा ''सि(शुष्क पक्व बन्धैश्च'' के अनुसार–द्विगुः, बहुब्रीहि एवं सप्तमी तत्पुरूष समास परिलक्षित है।

इसी प्रकार **'अद्भुतरामायण'** सर्ग–27 श्लोक–7 के अन्तर्गत उ(ृत पदों में अव्ययीभाव समास के उदाहरण भी द्रष्टव्य हैं। यथा–

)षयश्चाभिनन्द्यैनं ससीतं रघनन्दनम् ।
आशीर्भिर्वर्ध्यामासुर्ययुश्चापि यथागतम् ।। ;अद्0रा0 सर्ग–27/7द्ध

उपर्युक्त पद्य में अन्तिम शब्द 'यथागतम्' में 'पूर्व पद प्रधनो अव्ययीभावः' इस पाणिनीय सूत्राानुसार पूर्व पद– 'यथा' अव्यय शब्द के रूप में प्रयुक्त है।

इसके अतिरिक्त **'सीतारामयोर्यतः' 'भरतो लक्ष्मणश्चैव' 'शैलश्रृंघ्ग समुच्छया'** आदि अनेक शब्दों को कविवर वाल्मीकि ने छन्दोब(किया है। जिसमें पा0 सूत्राानुसार अन्यान्य सामासिक लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

5. उपसर्ग और प्रत्यय का प्रयोग भी महामुनि वाल्मीकि प्रणीत **''अद्भुत रामायण**'' में प्रायः सर्वत्रा देखा जा सकता है। यथा–

ध्यानेन मां प्रपश्यन्ति केचिज्ज्ञानेन चापरे।
अपरे भक्तियोगेने कर्मयोगेन चापरे।।
सर्वेषामेव भक्तानामेष प्रियतरो मम।। 13/23

उपर्युक्त श्लोक में 'प्रपश्यन्ति' एवं 'अपरे' शब्द में क्रमशः 'प्र' और 'अ' उपसर्ग का दिग्दर्शन एवं 'प्रियतरम्' शब्द में ''द्विवचनविभज्योपपदे तरवीयसुनौ'' इस पा0 सूत्रा से दो सजातिय व्यक्तियों अथवा वस्तुओं में एक या दूसरे से उत्कर्ष या अपकर्ष बताते हुए 'तरप्' प्रत्यय युक्त शब्द–''अयमनयोः अतिशयेन प्रियः=प्रियतरः'' शब्द निर्दिष्ट है। ऐसे अनेक शब्द एवं पद्य प्रस्तुत रामायण में सर्वत्रा दृष्टिगोचर होते हैं। यथा–

रामस्तु पुष्पकारूढः सीतामालिंग्य बाहुना ।